





卷之四  
 四  
 五  
 六  
 七  
 八  
 九  
 十  
 十一  
 十二  
 十三  
 十四  
 十五  
 十六  
 十七  
 十八  
 十九  
 二十  
 二十一  
 二十二  
 二十三  
 二十四  
 二十五  
 二十六  
 二十七  
 二十八  
 二十九  
 三十  
 三十一  
 三十二  
 三十三  
 三十四  
 三十五  
 三十六  
 三十七  
 三十八  
 三十九  
 四十  
 四十一  
 四十二  
 四十三  
 四十四  
 四十五  
 四十六  
 四十七  
 四十八  
 四十九  
 五十  
 五十一  
 五十二  
 五十三  
 五十四  
 五十五  
 五十六  
 五十七  
 五十八  
 五十九  
 六十  
 六十一  
 六十二  
 六十三  
 六十四  
 六十五  
 六十六  
 六十七  
 六十八  
 六十九  
 七十  
 七十一  
 七十二  
 七十三  
 七十四  
 七十五  
 七十六  
 七十七  
 七十八  
 七十九  
 八十  
 八十一  
 八十二  
 八十三  
 八十四  
 八十五  
 八十六  
 八十七  
 八十八  
 八十九  
 九十  
 九十一  
 九十二  
 九十三  
 九十四  
 九十五  
 九十六  
 九十七  
 九十八  
 九十九  
 一百

॥

୧୫୭୭୩୧୫

414 414

414 40 112

शेषनागकणालयः॥ कामःश्यामःसखः

४५ श्रीदः श्रीपतिः श्रीपद्मिः कृतिः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



५२०३० चालागमकाहजा ३५०  
३० चक्रनिघ्न श्रवक ३५ चक्रनिघ्न

मोमसनाली  
मपरा

| सू | च  | उ  | मं | वु | वृ | श | रा | सू | च  | उ  | मं | वु | वृ | श  | रा | अथ |
|----|----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १  | ३  | ८  | ७  | ३  | २  | ८ | ८  | १  | ३  | ५  | ३  | ८  | ७  | ३  | ८  | ५  |
| २४ | २३ | २४ | १६ | १३ | ८  | १ | २१ | २४ | २८ | २६ | ३७ | ११ | १६ | १५ | १५ | ५  |
| ३५ | ५  | ०  | ०  | ३  | ०  | ० | ०  | ०  | २४ | ५१ | १५ | ५० | ३२ | ७  | ०  | ४२ |
| ३० | ३० | ०  | ०  | ०  | ०  | ० | ०  | ०  | ४१ | ४१ | ०  | ०  | १  | ०  | ०  | ४२ |

च ३२

|    |   |    |    |    |    |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | ४ | २  | ११ | ११ | ३  | ४  | ५  | ४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २८ | ० | २८ | ०  | ७  | १८ | ४  | ०  | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १  | ३ | ३  | ०  | ४० | ४  | २४ | ४८ | ४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |



घटि द्० सेचडावे पलवि द्० सेचडावे अंशतृश ३० सेच  
 डावे राशवारसेचडावे अस्मिन्कर्मसर्वस्यै  
 सिंहादुत्थायकापा धड धड धड धावमानाभवानि दत्ताना  
 दिव्यशस्त्रैस्तड ३ स्तोडयन्ति शिरांसि तेसां रक्तापिबन्ति  
 घुटु ३ प्रेषयन्ति पिशाचं तृत्तां २ रुसन्ति रवद ३ शांभ  
 विमां पुनारु ० इति ध्यानम् ॥ सप्तशक्तिं शुभं

०१०

योगिनीय

१३६ ५१

०५००००

१३००००

१३००००



ज्योतिप्रबोधमिति भाषाः केशववाक् श्रुतिश्च जयति  
 श्यन्वयः केशवस्य वाक् केशववाक् केशवसौ वत्स  
 रनामहं जीस्काः त्रैमाजो ज्योतिर्मिहं तिस्कीजो वाक्  
 वारिगहं सा श्रुतिश्च श्रुतिजो वदेहं साभिः सर्वापरिवि  
 राजमानहं कथं भूताः केशव वाक् केशवकी वारिगैके  
 मिहं तत्सृक्तकर्मचरणैः चित्तं परिशोध्य ज्योतिष्य  
 बोधजननि तस्य सृक्तानि तत्सृक्तानि तत्सृक्ता  
 ३॥ नां कर्म तत्सृक्तकर्मचरणा तत्सृक्तकर्मचरणा  
 तत्सृक्तकर्मचरणैः ततः कहियेति सकेशवके सृ  
 क्त कहिये भले कहिये दुये जा केशविः चार ताजका



१ दिगुथहंतिनाकाजो कर्मगणितादि क्रियाहंतिस्के  
 जाचरगोपादहंतिनाकर्कचित्तंदृढयकां परिशोध्य  
 चैत्यतशोधिके ज्योतिषप्रबोधजननि ज्योतिषप्रबो  
 ध ज्योतिषप्रबोध ज्योतिषप्रबोध ज्योतिषप्रबोध  
 मूल ज्योतिषप्रबोधजननिपरिशोध्यचित्तं तत्कृत  
 कर्मचरगोपादहंतिनाकर्कचित्तंदृढयकां परिशोध्य  
 वशक्षैतरुपायैर्व्यक्तिरुताजयकेशववाक्शक्तिश्च ॥१॥  
 जनयतीतिजननिज्योतिषप्रबोधजननिज्योतिषा  
 त्रिकाप्रबोधजोहजान तिसकिजननिकहियेमा  
 तोहं पुन कथंभृता केशववाक् फरकेमिहं केश

रामः

१



वकिवाशि. गहनार्थपूणा. गहनयत्त अर्थ. गहनार्थ. ग  
 हनार्थनपूणा. गहनार्थपूणा. गहनकहिये. वनकेसभा  
 न. दुर्गम. असोजा. अर्थप्रयोजनहै. तिसकर्कपूणाक  
 हियेभरिहैं. पुनः कथेंभूता. केशववाक्. फेरकेसिंहके  
 शव. किवाशि. स्वल्पाक्षरा. अपित. स्वल्पानक्षराशि  
 यस्यासा. स्वल्पाक्षरा. स्वल्पकहियेथाडहैं. द्वारजीस  
 विये. असिभिहैं. पुनकथेंभूता. केशववाक्. फेरकेसि  
 हेंकेशवकिवाशि. तदंशकते. उपाये. व्यक्तिहता. तथा.  
 अंशास्तदंशा. तदंशहता. तदंशहता. स्तस्तदंशह  
 तै. तिनोअंशकेजोहैं. अंशभाग. तिनोने. हतवाहिय.  
 किये. असंजोहैंउपाय. तिनोकरकेव्यक्तिहता. व्यक्ति



२

कृतकहिये प्रगट किई गई है कथं भूता श्रुति कै शि  
 हे वेद तत्सृक्त कर्म चरणों चितं परि शोध्य ज्योति प्रबो  
 ध जननि तेन सृक्तानि च तानि कर्माणी तत्सृक्त कर्म  
 चरणानि ते तत्सृक्त कर्म चरणों ततः तिसंवेदने सृ  
 त्त कहिये भले प्रकार कर्क कहिये हुये जो कर्म हैं तिनों  
 के चरणों जो आचरणों हैं तिनों कर्क चितकों शोध्य कर्क  
 ज्योति जाहे प्रकास स्वरूप परब्रह्म तिसका प्रबोध जो  
 हैं ज्ञान तिसकि जननि कहिये जगत् वरगो वात्सि है पु  
 न कथं भूता श्रुति फेरं कै सिद्ध श्रुति गहनार्थ पूर्णा  
 गहनार्थ जो गभिर अर्थ है तिसके पूर्ण है पुन कथं  
 भूता श्रुति फ श्रुति स्वल्पाक्षरा अपि च स्वल्प

राम

२



कहिये बहुत नहिं हैं अक्षरजिसुविद्ये अंसिभिः पु  
 नकथे अफे अइदंश सौते उपोये यत्किं यत्किं  
 ता तदंश जो हैं परमेश्वर के अंशावतार श्रीव्यासादिति  
 नाने सत कहिये किये असा जो उपोय है तिनैने य  
 त्तिसत कहिये प्रगट किइह पुनकथे भूताश्रुति के  
 सिद्ध श्रुति केशववाक केश जो है श्रीसमः तिसकी  
 वाकुवाशिह ॥ १ ॥ टिका हेशिष्य विष्णुरूपं रामं क  
 रणं च स्मर विष्णुरूपं विष्णुरूपं विष्णुरूपं असा  
 जो है राम रमैते योगिनो यस्मिन्निति राम तं राम श्रीर  
 घुनाथ जी को तत् करण च तिस करण को भी स्मर  
 स्मरण कर कथं भूतं राम के से श्रीराम को परिभक्त



३

मोर्विकेशचापः ईशस्यचापः ईशचापः मोर्विकया  
 सहितः समोर्विकः समोर्विकश्चासौ ईशचापः समोर्वि  
 केशचापः परिभग्नः समोर्विकेशचापो येन सः परिभ  
 ग्न समोर्विकेशचापः तं परिभग्नः समोर्विकचापः परि  
 भग्न कहिये तोडाहै. समोर्विक कहि चिख्वा समेत. ई  
 शचापः महोदेवका. धनुयजिस्ने. पुन. कथं भूत रा  
 मं फारक स श्रीरामकौ. दृढगुणाहारत्नसत्सुवृत्तवा  
 है. दृष्टगुणा यस्य स. दृढगुणा. दृढगुणाश्चासौ हार.  
 दृष्टगुणाहारः दृढगुणा हारगालसंतो. दृष्टगुणाहार  
 लसंतो. सुवृत्तो. सुवृत्तोक्तो वाह्यत दृढगुणाहारत्न  
 संतो. सुवृत्तवाह. यस्य स. दृढगुणाहारत्नसत्सुवृत्तवा रामः ॥

३



हुतं दृग्गुणहारत्नसत्सुखतवाहुं दृष्टुकहिये दृग्गो  
 वालानहिहं गुणहारजीस्काः ये साजोहं हारमौतियों  
 कासिस्वरिकेलसत्कहियेशोभायमानसुखतकहिये  
 भलेगोलवाहुभूजाजिस्के पुनकथंभूतगमं फेरके  
 शे श्रीरामकों सुफलप्रदं शोभनंच तत्फलं सुफलं  
 सुफलप्रददातित्ति सुफलप्रदं तं सुफलप्रदं सुफल  
 जाहं भला कलमोक्षतिस्कोदगोवाला पुनकथंभू  
 तं गमं फेरके से श्रीरामकों आतनृप्रभं नृप्रभा आ  
 ता नृप्रभा येन सः अतनृप्रभं तं आतनृप्रभं आतक  
 हिये ग्रहणा करीहं नृप्रभा नराकारजिस्के पुनकथंभू



४  
 तकराँ. केसककराँ. परिभक्तसमोर्विकेशचापं.  
 परिभक्तकहिये रं वडितकियाँ. समोर्विक. कहिये  
 ज्यासहित. ईशकहियेसमर्थ. असेग्रथकाराँकाचाप  
 धनुयजीसुने. पुन. कथंभूतंकराँ. फेरकेसेकरा  
 मूल. परिभक्तसमोर्विकेशचापं दृढगुणाहारत्नस  
 सुहृतावाह. सुफलप्रद मार्तण्डप्रभं तत्तमरगमक  
 राँ विल्लुसपम् २ काँ दृढगुणाहारत्नसतसु  
 हवाह गुणाश्चहाराश्च गुणाहारा. दृढाश्चतेगुणाहाराः  
 दृढगुणाहाराः दृढगुणाहारैत्नसैतौ. दृढगुणाहारत्नस  
 नौ. शोभनोद्यत. सुवृत्त. सुवृत्तश्चवाहश्च सुहृतावाह.

रामः॥

४



दृढगुणहारलसंतो सुवृत्तवाहः यस्मिन् ततः दृढगुणा  
 हारलसत्सुवृत्तवाहः दृढकहिये थोडे गुणजो है गु  
 णोंक हारजो है भागलेगा वाले अंक ति नौ कर्के लसत्  
 कहिये शोभायमान है सुवृत्त सुंदर परिधि और वाभु  
 ज तिसविये पुन कथं भूतं करणों फेर के शाहे करण सु  
 फल प्रदं शोभनानि चर निफलानि सुफलानि सु  
 फलानि प्रद दत्ति ति सुफल प्रदं भले जो है फल मंद फ  
 ल शीघ्र फल ति ना को देगो वाला है पुन कथं भूतं कर  
 णों फेर के से करणों आत नृ प्रभं आतानु प्रभा यस्मि  
 न ततः आत नृ प्रभं अत कहिये अंगीकार कि ई है पु  
 न नृ प्रभा सप्तां गुल द्वादशां गुल शंकु किछा याजिस्



टि

५

विंशं पुनः कथं भूतं करणां फलं केशाहं करणा विष्णु रूपं  
 विष्णु रूपं यस्य तत्तु विष्णु रूपं विष्णु कहिये व्याप्तेहं स  
 पः स्वरूप जिस्का ॥ २ ॥ टिकाः उरवः धीराः यद्यपि क  
 रणानि अकार्युः उरव कहिये बहुत असे धीराः धी  
 मूलः यद्यप्यकार्यु रुरवः करणानि धीरां सो बुज्यका  
 धनुरपास्य न सिद्धि रस्मात्तु ज्या चाप कर्म रहितं मुन  
 दु प्रकारं कर्तुं गृह प्रकरणौ स्फुट मुद्यतोस्मि ॥ ३ ॥  
 राजा है पंडित यद्यपि जौ भि करणानि करणों न ते बु  
 करणो बु तिन करणों विंशं ज्यका धनु ज्यासेव ज्यका  
 ज्यकाच धनुश्च ज्यका धनु दंडे क व द्वाव दंडे समा रामः ॥

५



सविये एकके वरावर भाव. अभिप्राय. कहरो काहुडा  
 ज्याजाहे. चिल्हा. धनु. जोहे धनुष. तिस्कों. अपास्य.  
 छोडके. अस्मात्. इससेमिद्वि. न. कार्य. किमिद्वि. न.  
 होहे. अहज्याचापकर्मरहित. सुलघुप्रकारं. ग्रहप्र.  
 करणं स्फुटं कर्तुं उद्यत. अस्मि अहं मे जोडूं. केशवसां  
 वत्सरकापुत्र. गणेशदेवसनामसो ज्याचापकर्मरहि  
 तं ज्याच. चापश्च ज्याचापौ. ज्याचापयो. कर्म ज्याचाप  
 कर्म. ज्याचापकर्मगारहितं. ज्याजाहे. मोवी. चापजाहे.  
 धनुष. तिन्काजाहे कर्मगारितादिकिया. तिस्कारिके  
 रहित. असा. सुलघुप्रकारं. सुतरो. लघु. प्रकारोपस्य  
 तत्. सुलघुप्रकारं. सुलघुकहिये. अतिशिघ्रहै. प्र



टि.  
६

कारजिस्का. चै. सा. ग्रहप्रकरणां ग्रहाणां प्रकरणां गु  
 हप्रकरणां ग्रहमोहो सूर्यादि नवग्रह. तिनाकाजोह.  
 प्रकरणा. मध्यमा. स्यष्टादि. करणा. तिस्कां स्युटं. परि  
 व्यक्त. चैसा. कार्पु. कर्गोको. उद्यंतो. स्मितयारुवाहं ३  
 मूलः दधीन्द्रो १४४२ नितमकईशा ११ इत्फलेन स्या  
 चैकास्थं रवि १२ शेषकंतुयुक्तं. चेनाद्यष्टयग.  
 मुतः सद्विघ्नचका. दिग्युक्ता १० दमर ३३ फलादि  
 मासयुक्तं ॥४॥ दधीन्द्रो. मितिभाया. द. २५ धी. ४  
 ईद्र १४ शाकालविष १४४२ चानितकहिये घटादरा  
 ईशदृतं ११ अनघटावुं हुवेमे ११ ग्याराका भागलेगा.

रामः ॥

६



ग्यारा का जो भाग लेक केल द्या पायाहं सो चक्र होता  
 हैं शेष जो बाकि वचाहे उस्कां रवि १२ हत वागमें गुण  
 देगा चैत्रमें आदित्य कर्क युक्तं महिना का जो डेढ़  
 पृथक् दो जगे रखे चक्र को द्विघ्न दुराग कर्ता १० दशा उ  
 स्म फेर जो डेढ़ ३३ तैतिस्का जाल द्या पायाहं दुसर ज  
 गमें जो डेढ़ ॥ ४ ॥ जिसमें दमर फलादि फल जो डेहं  
 उस्कां षष्ठ ३० तिथि में गुण देवे गत तिथि को जो डेहं  
 चक्र का छठा हि सा जो डेहं पृथक् दो जगे रखे यद्दल दो  
 ६४ चौसठ्का भाग लेवे लक्ष जो पायाहं उन जो दुसर  
 जगे रखाहुवाहे उस्म घटा देवे वियुत न जो डाग पा जिस  
 में अहर्गण होताहै वेवार वास्तो चक्र को ५ पांच में गु



टि

७

रांदेशा अहर्गणामेजोडककसात० सेंभाणलेककशा  
 शवारहोतेहेसोमवारकोशुन्य० मंगल१ बुद२ वृहस्प  
 ति३ शुक्र४ शनि५ सूर्य६॥ अथटीका० खकहिये  
 शुन० विधुक०१ तानक०४२ वभा११ सूर्यकाध्रवक  
 खनिघ्न३ गततिथियुग्नीर्यचक्रांगां दशाद्वय  
 थगमृताधियक्क६४ लब्धे० उनाहर्विपुतमहर्गणा  
 भवेद्वारस्याह्वर५ हतचक्रयुगगोत्रात्॥५॥  
 हाताहे० खकहियेशुन्य०५ निलकहिये३ रसहेव६  
 वारह्वय४६ ईश्वर११ सितचंद्रमेकाध्रवकहोताहे०  
 चंद्रमेक३ चका०५ थपयलेका० खगा२ जमो२ मर  
 गमः॥



मूल. खविद्यु १० तान ४२ कभा ११ स्तरौ ध्रुव. ख.  
 मनला ३२ सवाद्य ४६ ईश्वरा ११ स्तिरुचो वमु  
 खोथ खगाजमो सरुता ०१४ पा २१ गदिता विद्यु २१  
 तुंगजा ॥ ६॥ सैलाद्वार खशरात्र्यगो ७१२ १५०० क्षिति  
 भूवा भूतत्व दंतो ११२५१ ३२१० विटकेंद्र स्याद्वि सरयुगोप  
 गुणोद्भू ४१३१२७१० खयट्टयमावाष्पला ०१२६  
 १८१० द्वाकेंद्रस्य भूगो कुशक्रयमला ११९४१२१०  
 रास्यादिगोधोशने सैलापंचभुवोजमाधय ईमे  
 ७११५१४२१० यक्षपकः कथ्यता ७॥ सद्रागोद्भाकु  
 वेदा १११९२१४११० स्तपन ईह विधा शुलीनागोभु



टी.  
८

ध्रुवकः॥

| सू | चं | ऊ  | रा | मं | वु | वृ | शु | शः |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ०  | ०  | ८  | ७  | १  | ४  | ०  | १  | ७  |
| १  | ३  | २  | २  | २५ | ३  | २६ | १४ | १५ |
| ४२ | ४६ | ४५ | ५० | ३२ | २७ | १८ | २  | ४२ |
| ११ | ११ | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  |

अक्षरधरावर्ण

अता ४५१०  
चैदुमेके उ  
चको ध्रुवक  
डवा ॥ ६ ॥  
अथ सेला  
दोषभावा

अथ दोषकः॥

| ११ | ११ | ५  | ०  | १० | ८  | ७  | ७  | २  |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १२ | २२ | १७ | २७ | ७  | २२ | २  | २० | १५ |
| ४१ | ६  | ३३ | ३५ | ५  | ३३ | १६ | २  | २१ |
| ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  |

अक्षरधरावर्ण

सेला ७ दो  
२ खशरा  
५०१० अभा  
राहुका ध्रु  
वक होता  
है दिति  
ध्रुवमंग

रामः॥  
८



का. भू. १ तत्त्व २५ दंता ३२१० विदबुद्धकेकेद्रकाऽ  
 धि ४ गुणा ३ अङ्गव २७१० सूर्यगुप्तका. खकहियेश  
 न्य० चंद्रयमा २६ वेधिला १८१० बृहस्पतिकाध्व.  
 अथ शुक्रकेद्रका १ शक्र १४ यमाला २१०१ अथ  
 राश्यादिशने सेला ७ पैचभूषो १५ यमाध्व ४२१.  
 इमेध्वकडवे. २ ससे अंगदोपककहताडि॥ अथ  
 द्रागोज्ञाभाया॥ सद्रा ११ गोज्ञा १२ कुवेदा ४१० सूर्य  
 कादोपकाडवा. इहविधा. चंद्रमेका. शुलि. ११ गोभू  
 १२ यद्रद १० चंद्रमेका ३ चका. ५ द्वापत्यसि १७ देवा ३३  
 १८ स्तमसि. राडसा. खशुन्य. ३ डव २७ अशुगति ३८०  
 ५ थमंगलका. दिग १० शला ७ ५ ८ जवुद्धकेकेन्द्रका.



६१.  
२

विवकलनवर्भं अंकं भंचशोध्य विवकलनवर्भं अंकं नो  
 म२० सताईशकोशोध्य कर्कबुदकाक्षेपकहोता है ६ न  
 वपर २ नोन है नोकिवि आठकार शुन्यस्थाने २२ उन तेश  
 सताईश शुधो ३३ तैति ३३ बुदकाक्षेपकहुवा पुजिबृह  
 स्यतिका अदि ७ अश्वि २ भूपा १२ शुक्रकेंद्र राशिका ५  
 दि ७ नरव २० नव २१ शनिका गा २ तिथि १५ स्वर्ग २१  
 ८॥ दिनका जो है गंगा समुद्र असा जो है अहर्गणाति सवि  
 यं है भव उत्पति दिवस सूर्य सूर्यादि रेवट ग्रहों कि तिनों विद्य  
 चक्र निघ्न क्रवक को उन घराय कर्कक्षेपक युक्त जो डक  
 कर्म मध्यमं स्यात् मध्यमा होवे निज २ रूपन २ रंशों कि  
 या जनों विषं द्रुसं द्रुसं भाग लक प्रहोको चंद्रमा कि च



किवियं प्राक् पूर्वदेशवालोने दृशां शिवा कर्ना परापश्चि  
 मतर्फालोने मध्यमावियं स्वधनकर्ना जे सारथ जो जनमे  
 दसं भाग लेके ४१० पाया जाता है ॥ ६ ॥ द्युवज अहर्गण  
 को स्वदा जग रथ ख नग ७० एक जगे सहतरका भाग  
 लेगा शशरह ६० संगु राणा फेर ७० भाग फेर ६० गुणा  
 ७० भागतिन अंशादि भाग पावे दुसरे जग मे जो रया हुवा  
 है ३ स्महिन घटा वराणा ५ क स्वयं का जो मध्य है जे बुदका औ  
 र शुक्र का विब्रहि मध्यमा होता है गणा अहर्गणाम खति  
 तिथि १५० दो भाग लेगा अंश का घा अंश कहै आदि  
 जिस विय लिपिका जो कला विका लाम लिपिका घटा  
 दशि ध्रुव क ऊन दोप क युक्त मध्यमे स्थात मध्यमा



टी.  
१०

वषट् ११११२१६।० तुंगोच्चात्यष्टिदेवा पा १११३३।०  
 सामसियमुडवोष्टाग्नि ०।२१३८।० योथोमहिज  
 दिग् १० शैला ७ यो ८ जकेंद्र विवकलनवमं ८।२२  
 ३३।० पूजितेद्राश्विभूषा ७।२।१६।० सौकेकेंद्रगृ  
 हाद्योदिनखनव ७।२०।२१० शनोगोतिथिस्वगतु  
 ल्य २११५।२१।०॥ ८॥ दिनगगाभवरेटचक्रनिघ्न  
 ध्रुवनादिवसहृदुदये स्वाक्षेपयुग्ममध्यमं स्यात् नि  
 जनिजपुररखातस्थिताद्याद्रसलवलिप्तास्वरा जेनोधा  
 मिदोपरप्राक स्वखनग ७० लवहिनाद्युक्कोर्कस  
 ७॥ काखतिचिह्नगतगणानास्तिस्त्रिस्वांशकाद्याः ७

१५०

राम



होतोंहै। गणा अहर्गणको मनु १४ संदृत गुणाणा ईडु चं  
 डमेके वासो स्वः अहर्गणको दो जगे स्वः स्व जगे अदिभू १७  
 सतराका भाग लेणा शशगु ६० भाग १७ गुणिया ६० भा  
 ग १७ तिन भाग लेणा अंशादि डसरे जग मे घटा देणा गणा  
 अहर्गणामे स्वः मनु १४० हत भाग लेणा दो भाग लेणा अं  
 श पूर्व अंश पूर्व हे जिस विषे उनो कि कला विकलामे  
 लिप्तिका जो दो भाग पायेहं उन घटा देणा ध्रुव ककु  
 ऊन दोपक युक्त मध्यम मध्यात् मध्यमा होत है ॥ १५॥  
 नव द्वादि नमिति भाषाः दिन संघ अहर्गणको २० नो  
 भाग लेणा अंद्रतुंग चंद्रमेके ऊचके ऊचके तिन ल



८१  
११

वादिकको पावे. धुम्रज. हर्गामे. खनग ७० सहतरसंभा  
 गलेवे लिपिका का कला विकलामे जो डे देवे. ध्रुवक जन.  
 दोपक युक्त मध्यमा हाताहं ॥ नवकुमि १२ ईयुवेदे. ४५  
 धस्त्रसंघ. जो है. अहर्गण. का. द्विधा दे जग रवकर्कः  
 एकजगे १२ ऊनिससं. भागलेवे. तिनल वादिकको  
 पावे. एकजगे ४ पपेतालि ससं भागलेवे ३ स्के तिनभा  
 गपावे. कला विकलामे जा डे दे. जसाठ सं च डे तो. चडा दे. से च डे तो  
 अशादिकको पावे. फा. जो १२ ऊनिससं जो अंशका. अंशक  
 शकादि पायहं. ऊस्में ४ पपेतालि सका भाग जो डे देवे. जो डे दे.  
 चक्र शुध. ३ स्को. १२ वार. पूर्ण. पूर्णमे घटा देवे. ध्रुवक पूर्ण  
 ऊन. दोपक. युक्त. मध्यमे म्याता ॥ ११॥ टिका. दिनेगाता. रामः ॥

दे सं २

जे धा टि

से च डे तो

अंशक

जो डे दे.

रामः ॥



जोहं अहर्गण ऊत्को दिघ्ना १० दशसंगुणादणा दिधा  
 दोजगेख एकजगे अंककुभि १२ अनिसंभागलेवे  
 तिन अंकाको पावे फेसाडुसरेजगेदशसंगुणाहुवाहर्ग  
 गाहे ३ अस्मत्विशले ७ अतेहताका भागलेवे दोभागपावे  
 जसाठ संचदता अंशकविचढावेनाचढतानाचढावे  
 फा ३ अस्माविषाघटादेवे अनि १२ सकेभागमः ध्रुवकजन  
 दोपकयुक मध्यमं स्यात्ता गण अहर्गणाको नृघ्ना ति  
 नसंगुणाकर्के स्वदोजगेख वसुदृग्ल २८ एकलगे २८  
 अठारसका भागलेवे अंशादिति नभागपावे जोभाग  
 पायहे उनको जोडुसरेजगाम जोरयाहुवा तिनकायु  
 गाहुवा अहर्गणा अस्मत् अंश जोडुदेवे जो २८ काभाग



गामनु १४ हत रिंदुः स्यादिभु १७ भागहिनः ख  
मनु १४० हत गणोनालि प्रीका स्वांश पूर्व १०

टिकाः॥ द्युपिंडः॥ हर्गामे १२ धाराका भागलेखे ल्नुवा  
दिकार्को पाव गुरुक द्युपिंडः॥ हर्गामे खशलां ७०  
सहतरका भागलेख दो भाग पाव लिप्ति कार्को अंश

महादशाके स्वर्णकोट्यर्षे चोदमासिके १०। त्रिकीर्णे  
वर्षे दुसरे शुभा -आमसमउत्तराशुकी तौ वर्षे द्वे प्रक्रमके  
गुणोत्तरं स्वर्णहृदयानि किनो वर्षे शुभे स्वर्णोदय  
एवमत्राकीर्णक्रमेति दशाहानि ॥



कवियलिप्तिकाको अनघटादये ध्रुवक ऊनदोपक  
 युक् मध्यमं स्यात् द्विपिंड अहर्गशाकां चिनिधुति  
 नसं गुणादये द्विधा दाजगे रयः एकजग अक्षेपा  
 च पसं भागलतिनभाग अंशादिककोपाव दुसंज  
 गमेजोरयाहुवाहः अस्मदुभाञ्ज १०९ एकसेकया  
 सिकाभासतिन अंक अंशादिककोपाव फरजोप  
 यलाजा अंशादिकपायह जोफर अंशादिकपाय  
 वाह ऊनदोनाकारंतां दानाकाजाडदये भृगुकाचा  
 शुकेडहताह ध्रुवक ऊनदोपक युक् मध्यमं स्यात्  
 १३॥ दिनगशा अहर्गशामे रवाय्य ३० धृता ३० तिशास  
 भागलेव तिनभाग अंशादिकपाव शनिकवास्तज

निधु  
 जोञ्जक्त ३५ हु ३ मरावमी धुना रनादि अमलक जंजिमसे  
 ३०७ चक्रका ध्रुवा होनाह घराये लर ५ का होनाह ३ मरा  
 जकारे लोपक लवक्षेपमरा जोएतुदिमान १०३ मरा १॥



टी.  
१३

राः ५ हर्षको. अट् पंचभू १५ द्दुत्तभागलेवेदोभागपा  
 वृ. लिप्पिकाको कलाविकलामजाइदेवे. ध्रुवक. ऊन.  
 क्षेपकयुक् मध्यमस्या. गोक्षा ५२ गजा ८ सूर्यकि  
 घाद्विधाप्तात्फललव. कलिकैक्यं स्यादगुश्चक्र  
 शुद्ध ॥ १॥ दिघ्ना १० द्विधादिनगणोककुभि १२ स्त्रि  
 शाले ७३ भक्तफलांशककलां विवरं कुजस्यात्ता  
 त्रिघ्नागणस्ववसुदगल २८ वयुजशार्थ. केदुंल  
 गति ५८ होतिहं मध्यम. शशि. चंद्र. माकि. ५ भ. गा.  
 श्वा. ७२० पंचागतयो ३५ चंद्रमकिहर्षमथडिदला  
 ध ४१ ३५ चंद्रमकिउचकिगतिहुदी ॥ ॥ १४ ॥ ॥

रामः ॥

१३



राहुकिः स्वयं ३ कुशशिना ११॥ ३॥ राहुकिः विः ५  
 सृजमंगलकिः ईडराम ३१ साकोश्वितो २ घा ३३  
 मंगलकिः विः बुदके केंद्रचलकेंद्रकी लिप्ताहोति  
 बाधाहिगुराप्तगणानलिप्तम ॥ १२ ॥ द्युपिंडोर्क १२  
 लबाधागुरुस्यात् द्युपिंडात्तवशेला १० शलिप्ता  
 विहिनः वि ३ निघ्नाद्विपिंडाद्विधादोपकुभाज्ज १८१  
 रवाप्तौ शयागाभृगोराशुकेंद्र ॥ १३ ॥ स्वाग्य ३० धृ  
 त्तादिनगणोशमुखः शनिः स्याः त्यदयंचभू १५६  
 हे १८१६ जिना २४ बुदके केंद्रविलिप्ताहोतिह शरापखं  
 गुरुके मध्यमकिगतिहोतिहं शुक्रके आशुकेंद्रकि



प्र. ला. स.

१४

हस्तगणात्फललिपिकाड्याभोग्ना ५२ गजा ८२  
 विगतिः शशिनोभृगोश्वा १२० पंचाग्नयो ३५ ध  
 यडिला ४४ १ उचभुक्ति ॥ १४ ॥ राहोस्त्रयं ३ कुश  
 शिनो ११ स्मृजंडरामः ३१ स्तर्काश्वितो २६ चल्  
 केन्द्रजवोर्यह्रिद्भा १८ दलिनाजिना २४ विकलि  
 काश्चगुराशरा ५ रवं ० शुक्राशुकेंद्रगतिरद्विगुरा  
 ३७ शनई २१० ॥ १५ ॥ मोरकार्पायिविधुस्त्रमंकक  
 लिकोनाज्ञागुरुस्त्वार्यजोः स्मृग्राहचकुजशकें  
 द्रधमयाः र्यशयुभागशनिः शोक्रकेंद्रमथार्य  
 मध्यमगतिः मयातिहकुतुल्यतां सिद्धेस्तोरिह

रामः ॥



पर्वधर्मनयसत्. कार्यादिकैत्वादिशेत् ॥ १६ ॥  
 इतिकशकां वत्सरात्मजगशाशद्वजविरेचितसि  
 द्धोतरस्य यहलाघवमध्यमाधिकारप्रथमद्विकास  
 हितं संप्रयामि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गतिः गतिगुणा ३० शनिकिदो २१० ॥ १५ ॥ टिकाः  
 दकिः चारुः ककिजोः सूर्यकिगतिहै सो ईनकिविज्ञान  
 टिकाः सारः अर्कः अपिविधुः चै. आचार्यकहताह  
 कि। मनः अर्कः सूर्यः विधुः चंद्रमा उच्चः यहातिनः सा  
 रः मतसंलियहः सूर्यः सिद्धांत विद्येमिलतह अ  
 ककलिकानाजः अंकाश्चता कलिकाः अंककलि



टी.  
१५

का. अंककलिकाभि. उनाश्वा. सौ. अज्ज अंककलिको  
 नाज्य. अंककलिकाजोनौकलाहे. तिनौकर्के उनक  
 हियेकमी. असा. अज्यकहियेचंद्रमालियाहे. गुरुस्त  
 आर्यज. आर्यमततेलियोहे. अस्त्याहूच. अस्त  
 कुचराश्च. अस्त्याहू. अस्तक. मंगल. राहुभि. आ  
 र्यमततेलियोहे. कजजकेंद. कस्माजातकज. जस्यकेंद  
 के. कजचतार. जकेंदके. कजजकेंदके. कजकहिये.  
 वलसिद्धांतसे. उत्पन्न. असा. ज. बुधकाकेंदरयाहे.  
 अथ. आर्य. सधुभाग. शनि. अथ. इस्तेउपरांत. आ  
 र्य. आर्यसिद्धांतविषे. सधुभाग. इधुभिभाग. इधुभा रामः॥

१५



ग. ईषु भागेन सहितः सखु भागः सखु भाग कहिये पांच  
 भागः अधिक शनिः शनैश्चर मिलता है अथ शोक्र कें  
 डें आर्य मध्यम गतिः अथ ईस अपसंत शोक्र श्रु  
 क्रस्य ईदं शोक्र शोक्र कहिये श्रुक्र का केंडें आर्य म  
 ध्यमा गति स्यतत आर्य मध्यम गति आर्य पक्षते म  
 ध्यमह गति जिस्को असह ईमह कुल्यतां यांति ईमक  
 हिये यग्रहः द्युल्यतां दश सुल्यतां द्युल्यतां जां  
 तां द्युल्यतां द्युजाह द्युतिस्की तुल्यता जास दशका  
 भाग हतिस्को यांति प्राप्त हाताह सहसिद्ध ताः पर्वधर्म  
 जप सत्कार्यादिकं तु आदिशत ईह यहां सिद्धताः  
 सिद्ध कहिये टीकवठ असते बह जाग्रह हतिना कर्क



74

पूर्वधर्मजपसत्कार्यादिकं. पर्वशिच. धर्माश्च जपा  
 श्च सत्कार्याणिच. पूर्वधर्मजपसत्कार्याणि. पूर्वध  
 र्मजपसत्कार्याणि. आदौ यस्य तत्. पूर्वधर्मजप  
 सत्कार्यादिकं. पर्वशिच. धर्माश्च. जपाश्च. सत्कार्या  
 णिच. पूर्वधर्मजपसत्कार्याणि. पूर्वधर्मजप. सत्का  
 र्यादिकं. पर्वग्रहणादिधर्मविवाह. अतबंधादिजपादि  
 जोसत्भले कार्यादिकं. हे. तिस्को. ज्योतिशास्त्रज्ञा  
 रानेवालो. आदिशत. आग्याकर. ग्रहभूठ पडेता. दि  
 नेभूठ पडत है ॥ इति श्रीग्रहलाघवसिद्धान्तस्य मध्य  
 माधिकारटिकायां प्रथमः ॥ १॥



मूलः दोस्त्रिभो नत्रिभो द्विविशोध्यं रशौ दचक्रतां ॥ २ ॥  
 का २ धिके स्याद्भुजानं त्रिभं ३ कोटि रैकक कत्रि ३ त्रि  
 भे स्यात्पदं सूर्यमंदोश्च मष्टाद्वयां ७ ८ शा भवेत् ॥ २ ॥  
 मंदोचं ग्रहवर्जितं निगदितं केद्रुतदारव्यं बुधे केद्रं स्या  
 त्वमृगां फलं कियत्तुलाद्यथा विधेयं रेवे केद्रं तद्भु  
 जयचर २ लवानध्वानखा २० स्तेष्टयक तजो २  
 शानगद्यु ५७ भियारि हता स्तेशादिके स्यात्फलं ॥ २ ॥  
 विधा केद्रदो भाग यष्टानधनिध्वा खराम ३० पृथ  
 कुतन्तरवां २० शो नितेश्वरमदो ५६ हतास्ते लवा  
 द्ये फलं स्याद्द्विंडु स्फुटो संस्फुटो स्तोचताभ्यां ॥ ३ ॥



रामः ॥  
१६



ताहै ॥ १८ ॥ मे ३० संभाग दिया तो २१९८।०१० उच्च  
 हाताहै ॥ १८ ॥ मे ३० विषं स्वर्य काम ध्यमा घटाया तो बुध के  
 इनिगदितं बुध जो पंडित हैं केन्द्रकों निगदितं केंद्र  
 कहते हैं केंद्र तद्भुज तिस केंद्र के भुज पूर्ववत् कर्क  
 भाग राशिकों गुणायतुश राशिकों ३० संगुण कर्क रेख  
 चरलव ॥ १८ ॥ अंशादि तिन भाग लगाने अननिघ्नानरा  
 उन कहिये घटाय गए निघ्न कहीय गुण गये २० कवि  
 यं तद तिसापिछे गोमूत्रिका कर ॥ १ ॥ टिका जाल्हा  
 के तिन लवादिक यायेह उस लवादिक को दो जग रेख  
 यक जग विश २० विशम घटावे विश २ विशम जो घ



टी.

१७

यहै उस्कां अननिघा कहतेहै फेरजो लवादिक् औरः  
 अननिघाहै उस्कां गुणद्वे गोमुत्रिकामे २/३५/५४  
 फेरयेति १/२/६ फेरगोमुत्रिकाकां दो २/१०/१०  
 जगेर २/६/६ ये २२/२२ एकजगानो दो ६/२०  
 संभाग ३२/३५/३२ दे ५३/५३ रानो का जो लवादि  
 पायाहै उस्कां नग युभि ५१/५१ सतावन पुरो २५  
 धराद्वे येक्ये उस अशादिककां ६० संगुणकर्क  
 निचका अकजोड कर्क फेर ६० संगुणकर्क फेर निच  
 ला अकजोड कर्क फेर ६० संगुणकर्क फेर निच ला  
 येसा येक्य गोमुत्रिकाका कर गोमुत्रिका जो ५१/५१ रामः॥

२७



गोपनीकासाजो अंक दे ३ को ६० से अंग्रे ३२ अंक मे ५१ ततावन पूर्ण  
 मेषदाह ३ समभाग लेवे मंदफल फल स्यात् ३ मेषादिके द होवे जो ३  
 मंदफल होत है ३ समं दफल को केंद्र मे १२।३।४।५ धन देवे तुला  
 जाइये केंद्र तु ६।१।८।२।१०।११। इत्याध्यादेवे सु ११। इति  
 र्यमध्यम दृष्टा धन कर्क मंदस्यष्टसूर्य होताह ॥ अथ दे  
 शांतर ॥ अपरा पुरकिरवा लव २५ पचिस दक्ष संभाग  
 लेवे ॥ और जाशशरु उस्का द गुणा देवे दक्ष संभाग ले  
 गा देशांतर होताह ॥ अथ पलभा ॥ १।१।७ तीन जग  
 य चरखंड के नास्त पयलि पलभा १० दश सं गुणा इस  
 रि पलभा भुजगे ८ आठ सं गुणा तिसरि पलभा १० दश  
 सं गुणा कर्कतिन संभाग लेवे तिसरा चरखंडा होताह गुणा



टी.  
१८

कर्के ईत निडवि. १०१५६।२३ इह चरखंडे हुवे ॥ अपना  
शकेन सहित सायन सांसु. अयनां शको जोड दिया मं  
दस्य धृम सायना सांसु होता है. अवडस सांसु का भुज  
कर्ना. दोस्त्रिभानं विभाई मिति. इस श्लाक संधययक  
के पूर्ण होवेता. १० गुण कहोता है. १ एक होवेता ५६ गुण  
कहोता है. २ दो राश भुज होवेता २३ गुण कहोता है. कम  
इस्का यह कि २३ तैस गुण कहोता. महतर १० और  
५६ छ पुंजा का जोड देवे. राश का मय देवे. और तैस २३ तिन  
अंको को गुण देवे. दो का तो ६० संच दवे. ३ पर तिसर मं  
२ चशका भाग देवे. महतर और छ पुंजा डे है. ऊना मजा राम ॥  
जा



उदये चरहाताहं चरकोंछ संचदादेवे चरसंस्कारहं  
 भागदेकर्कसोजके १३ गते पुषांत १३ गते तक याम्यगा  
 लके विषे १५१० पूर्णमे चरसंस्कार घटादगा चैत्र  
 १३ गते पुषांत सोज १३ गते तक साम्यमालके विषे  
 चरसंस्कारको जोडदगा दिनार्द्धहाताह दिनार्द्ध  
 कोडुगा कर्क दिनमानहाताह दिनमानके शुध  
 कर्क रात्रिमानहाताह रात्रिमानके घटी मरसंभा  
 गले कर रात्रि अर्धहाताह रात्रि अर्धकाछ मशुद्धा  
 कियाता मिषमानहाताह अर्द्धरात्रि चार दिनमा  
 न जोड दियाता मिषमानहाताह अयनां सायन  
 सूर्यको दवे अजे वडवह गां तुलाखडवधनं च



८१

१२

रसंस्कारको सूर्य कि धड़ि और पलामे इगा धनको  
 सूर्य प्रात्कालि हाताहें अथ चंद्र मे सूर्य काटिका  
 अथ चंद्र मे कि नैकि सूर्य का जो चर संस्कार है उस  
 को द्विघ्न इगा कर्ना और नवधृत और नवोका  
 भाग देगा दो भाग पागे तो चर संस्कार दुवा जे सूर्य  
 मध्याया हातो चंद्र मे मे विधायगा और सूर्य मे  
 विधुक् जोडा हातो चंद्र मे मे विजोडना मध्यमा के विधे  
 चंद्र मे के मध्यमा मे अथ दशांतरः ४ संस्कार देशां  
 तर सदा धराया जाताहें युक् जोडा कभि नै जाताहें अ  
 थ मंदफलम् संस्कारः सूर्य का जो मंदफल है ऊ

देशां

४  
१०

तमः

१२



तको २० स्ताईशका भाग देणा तिन चंको का पाव  
 णा. सूर्य वत देणा मद फल घटा य होतो चं घटा  
 णा. युक्त जोड़ा होतो जाडना तिन संत्कार देके चं  
 कि होति है। उचके मध्यमामे चंको घटा य दिया  
 तो केंद्र भवति. केंद्र होतो है. केंद्र का भुज कर्ना. दक्षि  
 भोनं चि भोर्द्ध. इस श्लाकसे. उस भुज को गुणिया  
 नृश ३० नृशसे गुणक केंद्र से भाग लेणा. फार शशगु.  
 द. निचला चंको जाड कर्क फार भाग द से लेणा. फार श  
 श. गु. द. निचल से चडा कर्क फार भाग लेणा. एत तिन  
 भाग लेणा. उस लवादि क को दा जगत्वे. एक जगता  
 ३० पृष्ठा २ मध्याव. फार नृश पुरा मे जो घटा या है. आ



टी.  
२०

रजोत्प्लाविकहे. ऊनाकों गोमुत्रिकामे देव गोमुत्रि  
 कामे अपसमे गुणो. गुणकर्क. दोजगे रये. दोजगे रय  
 कर्क. येसि. गोमुत्रिका र्तनिरुर्. १२२ ई. १२२ तो  
 रयजगमे विशसं २० भागलेगा. शशरहे. ऊसकों द  
 गुणकर्क निचसंच दायकर्क २० भाग. फेर. शशशु  
 रिर्द. निचसंच दाय. भाग. २० एतेहि तिन चंका  
 को पाव. रसदो. ५६। १० म ऊसकों चंशादिक को घ  
 दायणा तय उत्का ऐक्य कर्नी फेर गोमुत्रिका को विये  
 क्य कर्नी. फेर गोमुत्रिकामे ५६। छयं जा पुर्ण मि घय  
 याहे उत्का भागलेगा. भागलेको. मंद फल होता है.

रामश

२०



मंदफलत्रैकिमेजाडदेखाया.केंद्रदेखकर्केचंद्रमाका  
 धरायातो.चंद्रमेकाप्रतिकालीत्यस्यहोताहेशुभम्  
 हससंज्ञातगतिकाटिकाकहताहु॥  
 मूल.केंद्रस्यकोटिलवस्वाश्वि२०.लवाननिघ्ना  
 रेट्रा११.रेवेस्त्रिकु१३.इत्ताःशशिनोद्विनिघ्नाःस्वां  
 गा४६.शकेनसहितश्चगतो धनर्या केंद्रकुलिस्मृण  
 यद्गतेस्फुटास्यात्॥४॥मेयादिगेशायनसूर्यः  
 दिनाईयाभापलभाभवेत्सावि३.स्याहतास्युदश  
 भिभुजैगदिम्भि१०।७।१०.श्वरर्दोनिगुरणोदृतांत्या  
 ५॥स्यात्साधनास्मांशुभुजर्द०।५६।२३.संख्य



ॐ  
 मृ  
 २१  
 चर्गद्योगालवभोग्यघातुत् खाग्याप्ति युक्तस्त  
 चरधनर्गा तुलाजयद्रोतपनेन्यथास्ते ॥६॥ दियंतश्च  
 रमणाविलिप्तिकासु मध्येदौ द्विरगुणा ३ नवा २  
 दृते कलासु भक्तं २० तद्युमणि फलं लवेदाब्धद्यू  
 न ४।४।४ खरस ६० हतशकोयनांशा ॥७॥ भक्ता  
 थर्कविधोर्लवायमकुभि १२ यातातिथिः स्यात्क  
 लेशयंजातमिदं ह्यश्वपतितं भोग्यं विलिप्तास्त  
 यो भुक्तारं तत्र भाजिताश्च घटिकायां ते व्यकास्युः  
 तन्मातृपूर्वदि करणं ववाद्भुततिथिद्विरघ्नादिज्ञातं

राम  
 २२



भवेत् ॥ ८ ॥ तत्सैकं त्वपरदलेयशकुनेस्युक्तं  
 भूतोत्तराद्धाद्यविधोश्चशर्कसितगोलिप्ता  
 खखाद्ये ८०० इत्यायातेस्तोभयुतिक्कमाङ्गन  
 यणनिघ्नो ६० गतेय्यतयोः रिंदाभुक्तिहंतं जैक्य  
 विहते यातेय्यनाङ्कमात्र ॥ ९ ॥ इति कैशवसो  
 वत्सरात्मजगोशदेवजविर्गवत्सिद्धांतरस्य ग्रहलाघ  
 वे चंद्रकस्फटिकरणाधिकारोऽतिया ॥ २॥ श्रीरामो ज  
 अथ सूर्यकिगतिकाटिकाः सूर्यकंडकाभुजकर्नादो  
 स्त्रिभोनं निभोर्द्धः भुजकिगाटिकर्निः तिगपुरां मे  
 घटाणि तवकोटिहोतिहः लवादिकराश ३० तुशमं



दी.

२२

भुगादेणीकर. चंशको चढावे. विशका २० भाग देणा  
 शश ६० गुला कर्क निसे चढाय कर्क २० भाग. लक कर्क  
 शश गुलाया ६० नि. चढा कर्क २० भाग. देक कर्क ति  
 लवादि कपावे. लवादि कया रा ११ मेघ टाय देणा.  
 जो ग्यारामे घटाया. जो लवादि कहै. उनको गोसु  
 त्रिकामे देव. गोसु त्रिकामे १३ तेरा का भाग लेणा दे  
 भाग पातो ३४५६७८ धनं ८१०१११२ १२ हरांग  
 तिकर्का दोधन. मकरा दोहता. मध्य. गातम शुभं. कं  
 इको देय कर्क सूर्यका. अथ चंद्र गति टिका. शुभं. चं  
 इमेको के इका भुजकर्ना. भुजकि को टिको रे. पुता २ रामः॥



मेघदावे सूर्यवत् चंद्रमा किका हाताह फलजप  
 मुनिका हावे ताडघ्नरदुगिकर्नि और दो जगारये  
 एक जगदके संभाग लेणा शश ६० निवे चढाना  
 ६० के संभाग शश ६० गु और जोड सूर्य पर या हुवा  
 हे ऊस्म जोड देवे फेर के इको देव कर्क चंद्रमेका म  
 ध्यगतिम कि गतिक फो दो धन मका दो दशा ३१४१  
 ५१६१७ धन २१० १११० १११२ दशा ॥ रति द्वितिय  
 प्रकरण शुभम् ॥ अथ भौमादि टिका भौमा कि ज्य विहिन  
 मध्यम रवि स्यादा शुक्रं द्रुविद विद भूवा तक्त भौ ५  
 कि शनि रज्य दृ इना काम मध्यमा सूर्य के मध्यमा विवे  
 घदाय कर्क आशु के दं भवेत् आशु के दं हाताह वृश



टी.  
२३

मध्यम आशुकेन्द्रवने इव होता है बुध. शु. संस्कार  
 स्थयके मध्यमा विषदरा. त्यष्ट होता है. अथ भौम  
 के मध्यमा स्थयके मध्यमा मेघटादरा. आशुके  
 द होता है. सो द्वेष्ट राश संजादे होवे तो १२१०१००  
 वारा पूर्ण. ३ मेघटादरा जो वारा पूर्ण मेघटाया है.  
 उनको. अंशादिको. राशको ३० नृशमेगुगादवे.  
 १५ पनराका भागदवे. पुन. राशका जो भाग है. ३  
 न समान चलांक रंखडको दखे. ऊम. चलांक रंख  
 डके अंको को दो जगरेखे. एक आवे तो. दुसर मेरंख  
 डे मेघटादवे. दुसर मेना घटे तो. पयले घटावे. कम

रामः

२३



सेघटे तो चय फल होता है. ऊल्हा घटे तो क्षय फ  
 ल होता है. घटा यक कर्ज जो शश अंक रहता है. उन  
 तिन शश अंको को गुणा देव. तलांक दो अंको नि  
 चे सं ६० शा ठ सं ऊपर चटा देव ऊपर के तिसर अं  
 को मे १५ पनरा का भाग लेव. शश अंको को ६० गुणा  
 कर निचले अंको को ऊपर जोड़ कर १५ भाग लेव. ई  
 सि क्रम से तिन अंको चलांक खंडे को निच पावे चय  
 हावे युक्त कर. क्षय हावे तो ऊन कर. दृष्ट १० सं  
 भाग लेव. शश अंक ६० गुणा कर. तलांक को ऊपर  
 जाड़े. ई सि क्रम से तिन भाग पावे. योग मध्य मे चरफ



८१:

२४

लंस्यदलं प्रदद्यात्तिसत्राशुकेंद्रकं मंदफलमेदलं  
 २ दोसं भागलेखे त्र्याशुकेंद्रमेवादि तुलादिदेवक  
 र्कः अखिलं नामसंपूर्णमध्यमांके विषे दद्यात्तदंगा  
 साध्योद्धादिखः शिनागगृहत्तस्यान्तदकेंद्रं कु  
 जात् उत्तमं दस्यष्टकांसाध्यशोधकर्त्ता मं० ४१०१०१०  
 बु० १०१०१०० बु० ६०१०१०० शा० १०१०१० राश्यादि  
 मृदुकेंद्रहताहं मृदुकेंद्रभुज मृदुकेंद्रकापुर्ववत्  
 भुजकर्त्ता तशको ३० तृशसंगुणागा अंशकजो  
 डकर्क दिनाप्त १५ पनराका भागलेखा मदांक  
 छाटस्वडकां भागकः सद्विशखंडकोलेखे अंगे रामः ॥

शुद्ध

३३

००

२४



६ मं. स्प. १०

कवंडेमेघटायकरु शशांकतेजनीतिन. अंकको  
गुणादिगानिचलेदो अंककोदो. ऊपरचटाकरदि  
नेभक्ता १५३तिनभागलेगा खंडके अंकमेजाड  
देव घंडातरजो अंकहै गतिकेवालेखलेगा. दृ  
हतं १० दशसंभागलेगा. तिन अंकपावे. मुडुको  
इमेघादितुलादिदखकेधन. हगा. मध्यमामेकनी  
मध्यमामेधनहोवेतो आशुकेंद्रमे १० दशकाजो  
भागहै हगाकनी. हगाहोवेतो आशुकेंद्रमेधनकनी  
शिघ्रहकेंद्रहाताहै. ईदंशिघ्रकेंद्रसाईईनभाश  
धं. दसंघसंघांतहाता १२। १० मशाध्यघटाद  
गा. तदंशा. तिल्का अंशकनीनिचका अंकजो



टी.  
२५

ले

डकर्के १५ पनरासं भाग देवे. फोर चलांक वडे खंडको  
देवे छव वत चय. द्यय को देव कर दशके भाग संति  
न अंक लिख जात है. उनको मंद त्यष्टक विषेशिघ्र  
केंद्रको देव कर्के देवे त्यष्ट होत है. एहि सब का क  
म है. शिघ्र केंद्र का अंत एक गतिके वास्ते होत है.  
॥ अथ भौमादि गतिः ॥

भौमां चलांक विवरं मितिः शीघ्र केंद्र वयत का च  
लांक खंडां के विषे मंगल के वास्ते शरह्त्त ५ पांच सें  
दो भाग ले गो चय होवतो मध्यम गति विषे जो डेवे  
द्वय होवतो घटा यदराजे मध्यम गतिके मात होवे रामः ॥  
२५



लिखित प्रमाण प्रमाण

केंद्राव्युत्कर्षे ॥ अथि।



ॐ  
८६

सविषे

२६

गतिकर्को दोधनं मकरादौ दृष्टं चलांक खंडका अं  
 तरदिया जिस्म ऊस्म देव भोमादि गति होति है शुक्रा  
 र्योमिति भाषाः अंत्यांग टि मं शुक्रो ग्या हवा खं  
 डा आवता त्त्यं त्यांग होता है जो शिष्ट केंद्र का पनरा का  
 लिया हुआ इति न अंक है दो जगाखे एक अंको  
 को १५।०।० मं घटा य दणा जल्यो जो अंक कम  
 होव उस विषे मंगल का अक्ष भक्ता प पांच संभा  
 ग लेव शुक्र का प स भाग लेव अंशादिक पाव  
 शिष्ट केंद्र दष के स्पष्ट के विषे दका स्पष्ट होता है  
 मंगल शुक्र का अंत्यांक होता है गति क्रमः कुज  
 बुध भृगु जाना च चलांको त्याग स्यति मं बु शु



शीघ्रकेंद्रकाजोशोशोकहे १० गुणदेखा मंगल  
 को ७ संभागलेगा ३५१० मजोडदेगा बुदको ७ सं  
 भागलेगा २७१० मजोडदेगा शु ३ तिनसंभागले  
 ५३१० मजोडदेगा य मध्यमगतियामेनाघटसके  
 ता मध्यगति ईसंस्कारोंविषेघटादेगोगतिहोति  
 हे मांदाकांतरा पुर्ववत् मृडकेंद्रदयककेंद्रके सुफु  
 टगति स्यात् शुधगतिहोति हे मार्गग्रहोंविषेता  
 त्काल ईष्टगति सस्कारा यतकर्नावक्रग्रहोंकेंवि  
 यउनकर्ना ईत्यस्यष्टा संस्कार संपूर्णम्



प्रश्नः

विषयः समः द्विष्टभावः

११५१७१५१११ २१४१६१७०१२१ ३१६१५११२

अलदिः कार्यहो स्थिरः द्विष्टभावः  
धाम्निः देहिसेः कार्यहो विलंबः

जीवः मूलकाष्टादिः

५ ४ १० ३१५ ५११२ २७ प्रश्नः १०१११

राजकार्यः भूमिकार्यः शुभकार्यः तिर्थधर्मः शिल्पिः भयः हनिः पशुः हनिः

सन्मुखदेषके प्रश्नकारतो धातुः लाभः आकाशदेषके प्रश्नकारो राजकार्यः देहिसे  
लाभहो निचे नौदेषके प्रश्नकारो भूमिलाभः पादाङ्गुलि विलंबहो शिष्टाङ्गुलि



दातधरकर पूछते जीवचंदासमजे. प्रोजानुमेजंघमेभि. जीवचंदासहुना  
 चपे. गुह. अथपौरां मेहातधरकर पूछते भय. दुख. भूमि. निमित्त्या विवाद  
 अहना. पेड़ पर. बगोडे पर. नाल पर. या कुच्छ निशा पर. हाता वध पूछते मू  
 ल. आशुदि. या कोहि. नई जागा. या कुच्छ हा निवहणा चये



Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta, Sharma Delhi Collection



ने संग्रहे नीचक

(यै १८)

मं.

सं. १८

१३७  
५१६

अथ नात कर १८

|     |     |    |    |    |    |    |    |    |
|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|
| सू  | चं  | मो | व  | ध  | श  | श  | रा | व  |
| २   | ५   | २  | १  | २  | १  | ३  | १० | ४  |
| ५   | ३७  | १२ | ०  | १२ | ५  | २१ | ३  | ३  |
| ११  | ५   | १२ | ५३ | ३३ | ४५ | २० | ५३ | ५३ |
| १   | ५३  | ४५ | ५५ | २८ | ३३ | ५४ | ५७ | ५७ |
| ६१  | ७३० | २४ | ६६ | ३  | ४५ | ७  | ३  | ३  |
| १५  | १०  | १६ | २४ | ५३ | ३२ | १६ | ११ | ११ |
| उदय | वी  | मो | मो | मो | मो | मो | मो | मो |

|   |    |    |   |   |   |   |   |
|---|----|----|---|---|---|---|---|
| ह | चं | मं | व | ध | श | श | ल |
| क | क  | क  | क | क | क | क | क |
| म | म  | म  | म | म | म | म | म |
| व | व  | व  | व | व | व | व | व |
| ध | ध  | ध  | ध | ध | ध | ध | ध |
| श | श  | श  | श | श | श | श | श |
| ल | ल  | ल  | ल | ल | ल | ल | ल |

६८

६६

६

४

३

शंजीगो

२०२१/०१/१५/१२/१६/१७/१८/१९/२०/२१/२२/२३/२४/२५/२६/२७/२८/२९/३०/३१/३२/३३/३४/३५/३६/३७/३८/३९/४०/४१/४२/४३/४४/४५/४६/४७/४८/४९/५०/५१/५२/५३/५४/५५/५६/५७/५८/५९/६०/६१/६२/६३/६४/६५/६६/६७/६८/६९/७०/७१/७२/७३/७४/७५/७६/७७/७८/७९/८०/८१/८२/८३/८४/८५/८६/८७/८८/८९/९०/९१/९२/९३/९४/९५/९६/९७/९८/९९/१००



Handwritten notes and calculations at the top of the page, including numbers like 33, 30, and various small figures.

६ - ७००

अथ उधान्ता

केतवान्तर

| शु   | के   | शु   | सु   | च    | म    | न    | व    | श    | के   | शु   | सु   | च    | भा   | ता   | वृ   | श    | वृ   |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| १    | ०    | २    | ०    | १    | ०    | १    | १    | १    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    |
| ८    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ०    | ३    | १०   | ३    | ५    | ३    | ५    | ८    | ८    | ८    |
| ४    | २१   | ३१   | १३   | १३   | २१   | ११   | २६   | २६   | ११   | ७    | २    | ३    | ११   | ६    | ५    | २१   | २१   |
| ६    | ६    | ३८   | ४८   | ०    | ६    | ४८   | ४८   | ४२   | ३४   | २०   | १२   | ४०   | ३४   | १८   | ५२   | ४३   | १४   |
| ४५   | ४६   | ४७   | ४८   | ५०   | ५    | ५२   | ५४   | ५६   | ५४   | ५१   | ५८   | ५८   | ५८   | ५८   | ५८   | ६०   | ६१   |
| ७    | ४    | ५    | ०    | १    | १०   | ८    | ४    | ३    | ७    | ५    | १    | ५    | ५    | ५    | १०   | ८    | ५    |
| २५   | १६   | १३   | २१   | १०   | ११   | १३   | १८   | २०   | १५   | २५   | २८   | २६   | २२   | २८   | २०   | ११   | ११   |
| ६    | १२   | ४०   | ३६   | ३६   | ४२   | ३०   | २८   | ०    | ३१   | ५२   | ३    | ४३   | ११   | ३५   | ३१   | १०   | २४   |
| १५६१ | १५६२ | १५६४ | १५६५ | १५६६ | १५६८ | १५७० | १५७१ | १५७२ | १५७३ | १५७४ | १५७५ | १५७६ | १५७७ | १५७८ | १५७९ | १५८० | १५८१ |



प्रथम द्वादश वर्षादि बन्धुप्रमारा  
घटि २३।१४

बन्दी प्रमारा  
घटि नन। १४  
परम-साय

|    |    |    |    |    |     |     |     |
|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|
| 4  | 90 | 25 | 83 | 76 | 100 | 100 | 100 |
| 9  | 3  | 99 | 99 | 3  | 4   | 6   | 4   |
| 93 | 93 | 39 | 29 | 30 | 99  | 20  | 99  |
| 22 | 44 | 39 | 0  | 40 | 28  | 28  | 28  |

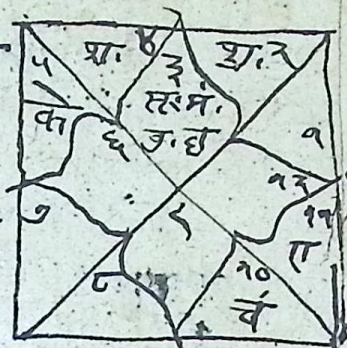
मोक्ष का

ता.मे.

३७४  
१३४४  
१३४४  
१३४४

१३४४  
१३४४  
१३४४  
१३४४

| ग  | क  | च  | म | व | व | श | श  | ल  |
|----|----|----|---|---|---|---|----|----|
| ग  | १० | ३  | ३ | ३ | ३ | ४ | ११ | ३  |
| ह  | ५  | ५  | ५ | ५ | ५ | ५ | ५  | ५  |
| इ  | १३ | १३ | ३ | ३ | ३ | ३ | १३ | १३ |
| श  | १३ | ५  | ५ | ५ | ५ | ५ | १३ | १३ |
| न  | १३ | ५  | ५ | ५ | ५ | ५ | १३ | १३ |
| वा | १३ | ५  | ५ | ५ | ५ | ५ | १३ | १३ |
| न  | १३ | ५  | ५ | ५ | ५ | ५ | १३ | १३ |





चय फल हे माह  
लास धाम

४०  
१२

| ल  | स  | ध  | म  | स  | मु | स  | मु | स  | र  | स |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|
| २  | २  | ३  | ३  | ३  | ४  | ४  | ५  | ६  | ७  | ७ |
| १३ | २२ | ०  | ८  | १८ | २७ | ६  | ३७ | १८ | ८  | ० |
| ८  | ०  | ५० | ४० | ३९ | २९ | १९ | ३७ | ४० | ५० | ० |
| ५० | ७  | २५ | ४३ | १  | १८ | ३७ | १८ | ४३ | २५ | ७ |
| ८  | ८  | ८  | ८  | ८  | १० | १० | ११ | ०  | १  | १ |
| १३ | २२ | ०  | ८  | १८ | २७ | ६  | ३७ | १८ | ८  | ० |
| ८  | ०  | ५० | ४० | ३९ | २९ | १९ | ३७ | ४० | ५० | ० |
| ५० | ७  | २५ | ४३ | १  | १८ | ३७ | १८ | ४३ | २५ | ७ |

अथ श्रीरामचन्द्राक्षरप्रदीपिका

| पिं | या | म  | म  | ऊ  | लि | प्रा | म  |
|-----|----|----|----|----|----|------|----|
| ०   | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०    | ०  |
| ११  | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११   | ११ |
| ३   | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३    | ३  |
| २४  | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४   | २४ |
| ३४  | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४   | ३४ |
| ११  | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११   | ११ |
| ३   | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३    | ३  |
| २४  | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४   | २४ |

| स  | च  | म  | उ  | वृ | शु | श  | रा | के | अथ | चंद | म  | क  | चै | की | च  | व  |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| २  | ८  | २  | २  | २  | १  | ३  | १० | ४  | २५ | ६   | ११ | ३  | ५  | ११ | ११ | ११ |
| ६  | ३  | १२ | १२ | १२ | ५  | २  | ३  | ३  | २६ | गा  | ३  | ५  | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ५  | ४  | १२ | ११ | ३३ | ४४ | २० | ५४ | ५४ | २२ | ५५  | ३  | ५  | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ५० | ४३ | ११ | ३३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४३ | ३९  | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| ६९ | ३३ | २४ | ५६ | ३  | ४५ | ७  | ३  | ३  | ४३ | ३९  | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| २५ | १० | ९६ | २४ | ५६ | ३२ | १६ | ११ | २३ | ४३ | ३९  | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |

म. ख. श. र. व.

| म  | ख  | श  | र  | व  |
|----|----|----|----|----|
| ११ | १  | ३  | ११ | २  |
| २२ | १६ | २४ | ५१ | १२ |
| ३१ | ४७ | ३८ | २५ | १२ |
| ४६ | ५० | ४५ | ३० | ११ |

अथ उध के संस्कार

| म  | ख  | श  | र  | व  |
|----|----|----|----|----|
| ११ | ४  | २  | ११ | २  |
| २२ | २४ | ८  | १८ | ८  |
| ४२ | ५५ | २४ | ५१ | २३ |

अथ चंदमो कचै की च

| म  | ख  | श  | र  | व  |
|----|----|----|----|----|
| ११ | ३  | २  | ११ | २  |
| २६ | २२ | १२ | २३ | १२ |
| २४ | ३१ | ३५ | १० | ३३ |
| ८  | १० | ५  | १२ | २५ |

शानि संस्कार

| म  | ख  | श  | र  | व  |
|----|----|----|----|----|
| ११ | ४  | ३  | ११ | ३  |
| १३ | २८ | ११ | २१ | २१ |
| ४२ | ३३ | ११ | ३० | ३० |
| २२ | ४२ | ३५ | ३६ | ३६ |

म. ख. श. र. व.  
चै निघ्न धवर्क

म. ख. श. र. व.  
अथ तात कालि स्थ

| स  | च  | म  | उ  | वृ | शु | श | रा | के |
|----|----|----|----|----|----|---|----|----|
| २  | ३  | ८  | ८  | ७  | ३  | २ | ६  | ८  |
| २४ | २३ | २३ | २५ | १६ | १३ | ८ | ११ | २१ |
| ३५ | ५  | ३० | ०  | ०  | ३० | ० | ०  | ०  |
| ३० | ३० | ०  | ०  | ०  | ०  | ० | ०  | ०  |

| स  | च  | म  | उ  | वृ | शु | श | रा | के |
|----|----|----|----|----|----|---|----|----|
| २  | ३  | ८  | ८  | ७  | ३  | २ | ६  | ८  |
| २४ | २३ | २३ | २५ | १६ | १३ | ८ | ११ | २१ |
| ३५ | ५  | ३० | ०  | ०  | ३० | ० | ०  | ०  |
| ३० | ३० | ०  | ०  | ०  | ०  | ० | ०  | ०  |



नारायण प्रामोद मे. आर्. के. वै. व.  
२००३६७ ७०१७७  
मे. म.  
०  
२१

श्रीमंत १५।१६ शक १८१ चक्र ३० हर्गारा

३४२० वार ० मिथुनार्क गते ८ इष्ट १।१०

अथ मध्यमास्य ॥ स. के. न. वि. घ. गे. म.

स. चं. ऊ. रा. मं. व. व. शु. श.

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ५  | ५  | ५  | १० | २  | ११ | २  | ५  | ३  | १२ | २० | १८ | २५ | ६  |
| ५  | २५ | ७  | ३  | १३ | २२ | ७  | ३  | १८ | ६  | ३३ | ३८ | २  | १२ |
| ५  | ७  | ५  | १  | ५  | १८ | ५  | ३  | १८ | ३  | ६  | ३३ | ५७ | ७  |
| ५  | ५  | ५  | ०  | ३  | १८ | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  |
| ६९ | ३० | ६  | ३  | २४ | २६ | ३  | ४५ | ७  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  |
| १५ | १० | २४ | १९ | १६ | २४ | ५३ | ३२ | १० | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  |

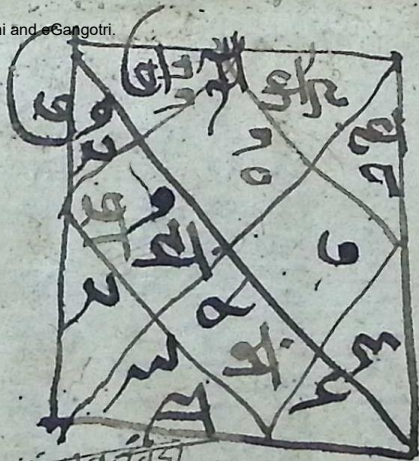
प्रथमाश २२।१७

वार १५७ संस्कार १।२१ दिना ७।३७  
दिना ३४।५४ रात्रि १।२५।६  
रात्रि १२।३३ मि ४१।३७

अथ घात कालि स्य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय





मंदावारिका

| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

मंदावारिका

| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |



अथ हर्गणमितिथिमिलानेतकी

गततिथिजोडदेवा १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३० इति क्रमः

चैत्र आदत्तकर्क महिनीको जोड चैत्र शुक्ल  
पक्षमें वैशाख आभावात्प्रातक पूर्णिमा जोड  
शसि प्रकार कर्क सर्वशेष १ अन्य श्लोके भव

मुद्दशा का धत्तक निचे प्रवीष्टे तो प्रविष्ट  
जोडे महिमे महिने जोडे निचे तिथिसे उपर  
डावे महिनीको १२ वार से उपर चडा  
राशमे ११ शुद्धा ३० अंश २२ शुद्धा घटि  
पल्लामे ५८ शुद्धा ५८ शुद्धा ११ इति





